SHRI CHATURANAN MISHRA: Then, the Chair should say something. *(Interruptions)*.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I can say something, if the Members allow the Chair.

श्री अनन्तराम जायसवाल: उप सभापति महोदया, रवा की 18 ऑयल वैल का या गैस के कुंओं का मामला नहीं है। सवाल यह है कि किस तरफ कदम बढ़ रहे हैं, उसको देखना चाहिए। इसमें सारा पैसा लग चुका है, सारी चीजें हो चुकी हैं और विडियोकोन से एक पैसा दिलाया नहीं जा रहा है और उसके साथ-साथ नये-नये तोहफों के साथ यह तोहफा पेश किया जाता है, नयी रियायतों के साथ। उसमें एक्साइज़ ड्यूटी की भी रियायत है। तो यह तो हो चुका है। मतलब, हमारे लिये भी संसाधन हैं उन सबको बेचने का सरकार ने फैसला कर लिया है और यह उसका एक नमूना है और कितने सस्ते दामों पर यह फैसला किया है। **(व्यवधान)**

श्री जगेश देसाई: ऐसा नहीं है, यह क्यों हो रहा है, इसके बारे में सरकार को... **(व्यवधान)** ऐसा नहीं है। The Government has helped the public sector. But if the private sector wants to have.. *(Interruptions)*... it is not allowing it.

उप सभापति: यह जनरल बात नहीं है। कोई भी इश्यू अगर ज़ीरो आवर में उठता है, वह स्पैसिफिक विषय पर होता है। अगर मेहरबानी करके उस स्पैसिफिक इश्यू पर आप अपने आपको सीमा में रखें तो बेहतर होगा। उस पर मैं कुछ कह भी सकती हूं और on general policy you don't expect the Minister or me to say something. I am sorry.

श्री अनन्तराम जायसवाल: इसलिए जो सवाल इन्होंने उठाया है, उसका जवाब मिलना चाहिए। माननीय मिश्र जी ने जो सवाल उठाया है इसमें करप्शन भी इन्वॉल्व है, देसाई जी भी कहते हैं कि इसमें कुछ गड़बड़ है तो सरकार को इस पर सफाई के साथ बात करनी चाहिए।

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: The statement made by the Minister is also indicative of the truth.

उप सभापति: देसाई साहब ने कहा कि इसके अंदर जो भी प्रोस एवं कॉन्स हैं, उसको देखें। **(व्यवधान)** May I ask the Members to sit down? Please let me explore the possibilities.

सवाल यह है कि अगर इसके अंदर कोई गलती हुई है तो सरकार उसकी पुष्टि करके पता लगाए। मंत्री महोदय, बैठे हैं, वित्त मंत्री बैठे हैं, प्लानिंग के मंत्री बैठे हैं और दूसरे लेबर मिनिस्टर, दे विल फाइंड आउट और जो मैंबर्स को शिकायत है, फिक्र है, उसका समाधान होना चाहिए। नोमानी साहब आप बोलिए। मुझे अभी एप्रोप्रिएशन शुरु करना है।

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: The Minister should give some answer. You have to direct him.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I cannot direct. I am sorry, I cannot give a direction.

Re. Plight of Weavers in Uttar Pradesh

मौलाना हबीबुर्रहमान नोमानी (नाम-निर्देशित): महोदया, मैं उत्तर प्रदेश के बुनकरों के बारे में कहना चाहता हूं। 1990 से बुनकरों की हालत बहुत खराब चल रही है और उन्होंने जो कर्जा लिया था, उस कर्जे की वसूली के सिलसिले में हजारों बुनकर अपने घरों को छोड़कर भाग रहे हैं और इसके लिए बुनकर संघर्ष करते रहे, मुतालवा करते रहे थे। जो ऐसी हालत पैदा हो गयी है, प्रजा पर जो संकट आ गया है, उसको देखते हुए इस कर्जे को माफ करना चाहिए। प्रधान मंत्री जी ने सन् 1992 में गोरखपुर में यह अनाउंस किया था कि बुनकरों पर जो कर्जा है, उसको हम माफ करेंगे और वह बात चलती रही। सितम्बर 1993 में यह तय हो गया कि चुनाव के पहले जब राष्ट्रपति शासन था और वह फिगर मंगा ली गयी कि उत्तर प्रदेश के बुनकरों पर 46 करोड़ 30 लाख रुपया असल मय सूद का है और यह फैसला हुआ कि 24 करोड़ 30 लाख रुपया सैंट्रल गवर्नमेंट देगी और 22 करोड़ रुपया सुबाई गवर्नमेंट देगी। डी०ओ० जारी हो गया कि 89 तक बुनकरों पर जितना कर्जा है, खाहे वह शहर में रहने वाले हों या देहात में रहने वाले हों, सबका कर्जा मय इंटरस्ट माफ होगा। यह रुपया, 24 करोड़ 30 लाख रुपया यू०पी० गवर्नमेंट को ट्रांसफर भी हो गया और जिन दिनों में ईमानदार अफसर थे, बुनकरों से कुछ हमदर्दी रखते थे। वहां पर यह काम हुआ लेकिन उसके बाद एलेक्शन आ गए। इलेक्शन खत्म

[मौलाना हबीबुर्रहमान नोमानी]

होने के बाद मेरी वहां के मुख्य मंत्री मुलायम सिंह जी से बात हुई। उन्होंने कहा कि बुनकरों के जो कर्जे हैं वे माफ हो गये हैं। लेकिन इन सब बातों के बावजूद, 24 करोड़ 30 लाख रुपया जा चुका है, लेकिन आज बुनकरों के खिलाफ नोटिस जारी हो रहे हैं, उनकी गिरफ्तारी हो रही है और उनको तरह तरह से तंग किया जा रहा है। इस मामले को लेकर लखनऊ में तकरीब एक महीने से बुनकरों का धरना चल रहा है। लेकिन अब तक मुलायम सिंह जी ने उन बुनकरों को कोई आश्वासन नहीं दिया है। हालांकि इसके पहले आजम खां*, जो वहां पर मिनिस्टर हैं, वे भी इसका एलान कर चुके हैं। इसलिए मैं चाहता हूं कि जब सेंट्रल गवर्नमेंट ने 24 करोड़ 30 लाख रुपया दिया है—बुनकरों का कर्जा माफ करने के लिये लेकिन वह काम नहीं हो रहा है— तो सेन्ट्रल गवर्नमेंट इसके अंदर मदालखत करे और मुख्य मंत्री को कहे कि जो नोटिस दिये हैं उन्हें वापस लो, वसूली स्थगित हो और तमाम फिगर्स लेकन— कल गाजियाबाद के कलक्टर से बात हो रही थी। वहां भी बुनकरों का एक ग्रुप आया हुआ था। वहां पर मालूम यह हुआ कि अभी तक उस जिले में कलक्टर ने फिगर्स ही नहीं मंगायी हैं। हम यह चाहते हैं कि गवर्नमेंट आफ इंडिया इसके अंदर मदालखत करे और बुनकरों के ऊपर जो कर्जा है— 46 करोड़ 30 लाख, 89 तक जिनके ऊपर बकाया है वह सारा बकाया खत्म हो और बुनकर जो आज परेशान हैं उनकी परेशानी दूर हो। मोहतरमा, आपको मालूम है कि जिस वक्त यह कर्जा माफ हुआ था उसके बाद हालत और बदतर हो गये। मार्च और अप्रैल महीने में सूत की कीमत 75 फीसदी बढ़ गयी और आज हालत यह है कि चाहे गोरखपुर हो या और जगह हो, तमाम काम बंद है और बुनकर बेकारी के शिकार हैं। ऐसी हालत में जरूरी है कि इस बारे में कोई कारगर कदम उठाया जाय और बुनकरों को इस कर्जे से मुक्ति दिलायी जाय। उनके खिलाफ जो वसूली के आर्डर हुए हैं, उन सब को स्थगित किया जाय। मैं आपके माध्यम से सेंट्रल गवर्नमेंट से कहता हूं कि वह इस सिलसिले में जल्द से जल्द कदम उठायें। अगर इसमें देर हो गयी तो हो सकता है कि अभी धरना है, कल सारे उत्तर प्रदेश के बुनकर जो हैं वे लखनऊ की सड़कों पर आ जांय और हालत ज्यादा गंभीर हो। इस तरह की हालात पैदा होने से पहले मैं यह चाहूंगा कि इस सिलसिले में कोई कदम उठाया जाय और जैसा वायदा किया गया है इस कर्जे से बुनकरों को मुक्ति दिलायी जाये।

*Transliteration in Arabic Script.

مولانا حبیب الرحمٰن نعمانی "نامزد"

مہودیہ ۔ میں اتر پردیش کے بنکروں کے بارے میں کہنا چاہتا ہوں ۱۹۹۰ء سے بنکروں کی حالت بہت خراب چل رہی ہے اور انھوں نے جو قرضہ لیا تھا اس قرضہ کی وصولی کے سلسلے میں ہزاروں بُنکر اپنے گھروں کو چھوڑ کر بھاگ رہے ہیں۔ اور اُس کے لیے بُنکر سنگھرش کرتے رہے ہیں۔ مطالبہ کرتے رہے تھے۔ جو ایسی حالت پیدا ہو گئی ہے۔ پرجا پر جو سنکٹ آگیا ہے اُس کو دیکھتے ہوئے اس قرض کو معاف کرنا چاہیئے۔

پردھان منتری جی نے ۱۹۹۲ء میں گورکھپور میں یہ اناؤنس کیا تھا کہ بنکروں پر جو قرضہ ہے اس کو ہم معاف کریں گے وہ بات چلتی رہی۔ ستمبر ۱۹۹۳ء میں یہ طے ہو گیا کہ چناؤ سے پہلے جب راشٹرپتی شاسن تھا اور وہ فیگر منگالی گئی کہ اتر پردیش کے بنکروں پر ۴۶ کروڑ ۳۰ لاکھ روپیہ اصل مع سود کا ہے اور یہ فیصلہ ہوا کہ ۲۴ کروڑ ۳۰ لاکھ روپیہ سینٹرل گورنمنٹ دے گی اور ۲۲ کروڑ روپیہ صوبائی گورنمنٹ دے گی۔ ڈی۔ او جاری ہو گیا کہ ۸۹ء تک بنکروں پر جتنا قرضہ ہے خواہ وہ شہر میں رہنے والے ہوں یا دیہات میں رہنے والے ہوں سب کا قرض مع انٹرسٹ کے معاف ہو گا۔ یہ روپیہ ۲۴ کروڑ ۳۰ لاکھ

روپیہ یو۔ پی گورنمنٹ کو ٹرانسفر بھی ہو گیا اور جن دنوں میں ایماندار افسر تھے۔ بنکروں سے کچھ ہمدردی رکھتے تھے۔ مولانا حبیب الرحمٰن نعمانی "جاری" وہاں پر یہ کام ہوا ہے لیکن اس کے بعد اعلان آ گئے۔ الیکشن ختم ہونے کے بعد میری وہاں کے مکھیہ منتری ملائم سنگھ جی سے بات ہوئی۔ انھوں نے کہا کہ بنکروں کے جو قرضے تھے وہ معاف ہو گئے ہیں لیکن ان سب باتوں کے باوجود ۲۴ کروڑ ۳۰ لاکھ روپیہ جا چکا ہے لیکن آج بھی بنکروں کے خلاف نوٹس جاری ہو رہے ہیں۔ اُن کی گرفتاری ہو رہی ہے اور اُن کو طرح طرح سے تنگ کیا جا رہا ہے۔ اس معاملے کو لے کر لکھنؤ میں تقریباً ایک مہینہ سے بنکروں کا دھرنا چل رہا ہے لیکن اب تک ملائم جی نے ان بنکروں کو کوئی آشواسن نہیں دیا ہے۔ حالاں کہ اس کے پہلے اعظم خاں جو وہاں پر منسٹر ہیں وہ بھی اس کا اعلان کر چکے ہیں۔ اس لئے میں چاہتا ہوں کہ جب سینٹرل گورنمنٹ نے ۲۴ کروڑ ۳۰ لاکھ روپیہ دیا ہے۔ بنکروں کا قرضہ معاف کرنے کے لئے لیکن وہ کام نہیں ہو رہا ہے۔ تو سینٹرل گورنمنٹ اس کے اندر مداخلت کر کے اور مکھیہ منتری کو کہے کہ جو نوٹس دے ہیں انھیں واپس لو۔

وصولی استھگت ہو اور تمام فیکٹرس سے کر کل غازی آباد کے کلکٹر سے بات ہو رہی تھی وہاں بھی بنکروں کا ایک گروپ آیا ہوا تھا وہاں پر معلوم یہ ہوا کہ ابھی تک اس ضلع میں کلکٹر نے فیکٹرس ہی نہیں منگائی ہے۔ ہم یہ چاہتے ہیں کہ گورنمنٹ آف انڈیا اس کے اندر مداخلت کرے اور بنکروں کے اوپر جو قرضہ ہے ۴۶ کروڑ ۳۰ لاکھ۔ ۸۹ تک جن کے اوپر بقایا ہے وہ سارا بقایا ختم ہو اور بنکر جو آج پریشان ہیں اُن کی پریشانی دور ہو۔

محترمہ۔ آپ کو معلوم ہے کہ جس وقت یہ قرضہ معاف ہوا تھا اُس کے بعد حالات اور بدتر ہو گئے۔ مارچ اور اپریل کے مہینے میں سوت کی قیمت ۷۵ فی صدی بڑھ گئی اور آج حالت یہ ہے کہ چاہے گورکھپور ہو یا اور جگہ ہو تمام کام بند ہے اور بنکر بیکاری کے شکار ہیں۔ ایسی حالت میں ضروری ہے کہ اس بارے میں کوئی کارگر قدم اٹھایا جائے اور بنکروں کو اس قرضے سے مکتی دلائی جائے۔ اُن کے خلاف جو وصولی کے آرڈر ہوئے ہیں ان سب کو استھگت کیا جائے۔ میں آپ کے مادھیم سے سینٹرل گورنمنٹ سے کہتا ہوں کہ وہ اس سلسلے میں جلد سے جلد قدم

*Transliteration in Arabic Script.

اٹھائے ۔ اگر اس میں دیر ہو گئی تو ہو سکتا ہے کہ ابھی دھرنا ہے ۔ کل سارے اتر پردیش کے بُنکر جو ہیں وہ لکھنؤ کی سڑکوں پر آجائیں اور حالت زیادہ گمبھیر ہو ۔ اس طرح کی حالت پیدا ہونے سے پہلے میں یہ چاہوں گا کہ اس سلسلے میں کوئی قدم اٹھایا جائے اور جیسا وعدہ کیا گیا ہے اس قرضہ سے بُنکروں کو مکتی دلائی جائے ۔

"ختم شد"

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश): महोदया उत्तर प्रदेश के बुनकरों के संबंध में मौलाना जी ने जो कहा है, मैं उससे अपने आप को संबद्ध करता हूं। उत्तर प्रदेश में बुनकरों की हालत खराब है। वैसे आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और सब जगहों पर खराब है लेकिन क्योंकि उत्तर प्रदेश में मेरा ताल्लुक है मैं चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश की ओर आप पहले ध्यान दें और बाकी बाद में देख लें। उत्तर प्रदेश के बुनकरों का कर्जा माफ किया जाये। महोदया, जब छोटे किसानों का कर्जा माफ किया जा सकता है तो बुनकरों का क्या कसूर है जो उनका कर्जा माफ नहीं किया जा सकता। मैं सरकार से अनुरोध करता हूं कि सरकार उनके कर्जे माफ करे।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश): मैं भी बुनकरों के कर्जों को माफ करने की दरख्वास्त करता हूं।

مولانا عبید اللہ خاں اعظمی : میں بھی بُنکروں کے قرضوں کو معاف کرنے کی درخواست کرتا ہوں ۔

उपसभापति: वह यह नहीं कह रहे हैं कि कर्जे माफ कर दिये जांये वह कह रहे हैं कि उनको पैसा दिया नहीं जा रहा है।..(**व्यवधान**)..

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: जहां बाकी है वहां माफ हो और जहां कर्जा नहीं दिया है वह उनको दिया जाये

مولانا عبید اللہ خان اعظمی : جہاں باقی ہے وہاں معاف ہو اور جہاں قرضہ نہیں دیا ہے وہ اُن کو دیا جائے ۔

उपसभापति: सेंट्रल गवर्नमेंट ने पैसा दिया है, सेंट्रल गवर्नमेंट ने उनकी मदद की है, इसलिये सेंट्रल गवर्नमेंट मोनेटरिंग करके यह देखे वह पैसा उनके पास बराबर पहुंच रहा है या नहीं पहुंच रहा है। यह उनका खास कहना है। क्योंकि इसमें सेंट्रल गवर्नमेंट का पैसा इन्वाल्व है, इसलिये उनका कहना है कि आप इस ओर ध्यान दें। आपने पैसा दिया है तो यह भी देखें कि वह बुनकरों के पास बराबर पहुंच रहा है या नहीं पहुंच रहा है और स्टेट गवर्नमेंट उसके बारे में क्या कर रही है, यह उनका कहना है।

श्री जलालुद्दीन अंसारी (बिहार): बिहार में भी बुनकरों की यही हालत है। वहां भी बुनकर भूखों मर रहे हैं। उनको जो सरकार की तरफ से सहायता मिलनी चाहिये, केन्द्रीय सरकार भी नहीं देती है और उनके जो कर्जे हैं जिनकी माफी का एलान किया गया था, वह भी आज तक माफ नहीं हुआ। इसलिए इस सदन के माध्यम से इसका समर्थन करते हुए बिहार, उत्तर प्रदेश और दूसरे राज्यों में जहां बुनकरों के कर्ज माफी का एलान था उसको माफ होना चाहिये और उन बुनकरों को भूखों मरने से बचाने के लिए वाजिब मदद समय पर मिलनी चाहिये। इसकी व्यवस्था केन्द्र सरकार के माध्यम से होनी चाहिये। यही हमारा कहना है।

شری جلال الدین انصاری "جاری"

بہار میں بھی بُنکروں کی یہ حالت ہے ۔ وہاں بھی بُنکر بھوکوں مر رہے ہیں ۔ اُن کو جو سرکار کی طرف سے ملنا چاہئے ۔ کیندریہ سرکار بھی نہیں دیتی ہے اور اُن کے جو قرضے ہیں جن کی معافی کا اعلان کیا گیا تھا وہ بھی آج تک معاف نہیں ہوا ۔ اس لئے اس سدن کے مادھیم سے اس کا سمرتھن کرتے ہوئے بہار ۔ اتر پردیش اور دوسرے راجیوں میں جہاں بُنکروں کے قرض معافی

کا اعلان تھا اس کو معاف ہونا چاہیئے اور ان بنکروں کو بھوکا مرنے سے بچانے کے لئے جو واجب سمے مدد ملنی چاہیئے۔ وہ ملنی چاہیئے۔ اس کی ویوستھا اس کے مادھم سے ہونا چاہیئے۔ یہی ہمارا کہنا ہے۔

THE APPROPRIATION (NO. 3) BILL, 1994.
THE APPROPRIATION (NO. 4) BILL, 1994
&
THE APPROPRIATION (NO. 5) BILL, 1994—CONTD.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now, we will have the Appropriation Bills.

Some discussion is left over. We have two other Bills also which we have to pass today—the Comptroller and Auditor General's (Duties, Powers and Conditions of Service) Amendment Bill, 1994 and the Salaries, Allowances, Leave and Pensions of the Officers and Servants of the Delhi High Court Bill, 1994. These are the two Bills.

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश): मैडम, एक मिनट।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: میڈم۔ ایک منٹ۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am sorry. Please sit down. I am sorry that you interrupt me when I am speaking.

आप लोग समझते क्यों नहीं? आप बीच में क्यों दखल दे रहे हैं?

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: आपने मंत्री जी से कहा था (व्यवधान) कपड़े वाले मामले के मुतालिक, मैंने सोचा कि वह कहीं रह न जाए।

*Transliteration in Arabic Script.

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: آپ نے منتری جی سے کہا تھا "مداخلت"... کپڑے والے معاملے کے متعلق۔ میں نے سوچا کہ وہ کہیں رہ نہ جائے۔

उपसभापति: बैठिये। आप एक बार मैंने मंत्री जी से कह दिया तो यह कोई जरूरी नहीं कि मैं उनकी ऊठक-बैठक कराऊं, वे खड़े हो कर बोलें। यह कोई तरीका है हाऊस को चलाने का। जब मैं कुछ बोल रही हूं, वह मामला खत्म हो गया, मैं एप्रोप्रियेशन की बात कर रही हूं और आप लोग इस कदर अजीब बात करते हैं, अगर मुझ में बर्दाश्त की ताकत नहीं हो तो I am afraid I will become mad. I am honestly saying this. The way you behave is very unsatisfactory. I am trying to streamline the House, जिसमें आप सब का स्पेशल मेंशन हो सके 15 लोगों ने स्पेशल मेंशन दिये हैं। किस तरह से हाऊस चले। इसमें आप लोगों का ही फायदा है, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं तो रात के 12 बजे तक बैठूंगी अगर आपको बैठना है तो।

Mr. Ashok Mitra, before I call you, I want to announce that we have one hour's time left with us. Within this one hour, we must get over the Appropriation Bills. By 3.00 p.m., we should finish this business. The other two Bills should be got over by 6.00 p.m. We must finish all the legislative business and then we will have the Special Mentions.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR (Uttar Pradesh): Cannot we take up the Special Mentions before 6.00 p.m.?

THE DEPUTY CHAIRMAN: They can be taken up earlier also. We will take up the Special Mentions as soon as the two Bills are passed but not later than 6.00 p.m.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: साढ़े पांच बजे कर दीजिये। स्पेशल मेंशन रहते हैं इसलिए कुछ गुंजाइश दे दीजिये। साढ़े पांच कर दीजिये।